NEWS FOR
UPSC
UPSC
IAS/PCS
STATE EXAM
All Exam
ABHAY SIR
CURRENT
AFFAIRS
Result Mitra
100.000
77.667
40.045
97.51%

जलवायु परिवर्तन और निजी विमान

जलवायु

जलवायु पर भारी पड़ रही निजी विमानों की आवाजाही, चार वर्षों में 46 फीसदी बढ़ा उत्सर्जन

2023 में, निजी विमानों ने कम से कम 1.56 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन किया। जो प्रत्येक उड़ान के लिहाज से औसतन करीब 3.6 टन था

Down To Earth

- दुनिया जहां एक तरह बढ़ते उत्सर्जन के कारण जलवायु में आते बदलावों से जूझ रही है। तो दूसरी तरफ अमीर व्यक्तियों में निजी हवाई जहाजों के प्रयोग का चलन बढ़ रहा है।

- अध्ययन से संबंधित नतीजे जर्नल कम्युनिकेशंस अर्थ एंड एनवायरनमेंट में प्रकाशित हुए हैं।

- जिससे होने वाला उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है। इसी संदर्भ में एक नए अध्ययन से जानकारी प्राप्त हुई है कि विगत चार वर्षों में निजी जेट विमानों की आवाजाही से होने वाले वार्षिक उत्सर्जन में 46 फीसदी की वृद्धि हुई है।

- शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन 2019 से 2023 के बीच करीब 26,000 निजी विमानों की 1.86 करोड़ उड़ानों से जुड़े आंकड़ों का विश्लेषण करके किया।

- अध्ययन के अनुसार वर्ष 2023 में, निजी विमानों ने कम से कम 1.56 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन किया।

- यह उत्सर्जन प्रत्येक उड़ान के लिहाज से औसतन करीब 3.6 टन था।

- यदि 2023 में सभी व्यवसायिक विमानों से होने वाले उत्सर्जन से तुलना करें तो यह उसका करीब 1.8 फीसदी रहा।

- हवाई जहाजों को जहां लम्बी दूरी की यात्राओं के साधन के रूप में देखा जाता है।

- किए गए अध्ययन में आपको जानकर हैरानी होगी कि इनमें से आधे निजी विमानों (47.4 फीसदी) द्वारा भरी गई 12,26,123 उड़ानों की दूरी 500 किलोमीटर से भी कम थी।

- वहीं करीब 204,300 उड़ानों ने 50 किलोमीटर से भी कम की दूरी तय की थी।

- इन विमान का प्रयोग दिखावे तथा टैक्सियों के रूप में किया जा रहा है। क्योंकि 50 किलोमीटर की दूरी एक कार द्वारा आसानी से तय की जा सकती है।

क्या अमीर तबके पर नहीं है उत्सर्जन कम करने की जिम्मेवारी :–

- निजी विमान पर्यावरण और जलवायु के लिए किसी खलनायक से कम नहीं। फिर भी इन विमानों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

- इनमें से कई उड़ानें ऐसी थी जिन्हें बस छुट्टियां मनाने और मौज मस्ती के लिए उपयोग किया गया।

- निजी विमानों का अक्सर उपयोग करने वाले लोग एक आम व्यक्ति की तुलना में एक वर्ष में करीब 500 गुणा अधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित कर रहे हैं।

- जलवायु परिवर्तन पर हुए शिखर सम्मेलन 2023 में (कॉप-28) और फीफा जैसे कप के समय विमानों से होने वाले उत्सर्जन में अच्छी खासी वृद्धि हुई।

- कतर में हुए हुए फीफा विश्व कप 2022 के के समय ही 1,800 से अधिक निजी उड़ानें भरी गई। जिनकी वजह से 14,700 टन सीओ2 उत्सर्जित हुई।

- बही कॉप-28 के दौरान 291 निजी उड़ाने भरी गई, जिनकी वजह से 3,800 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित हुई।

- वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम 2023 में 660 उड़ाने भरी गई, जिससे 7,500 टन सीओ2 उत्सर्जित हुई।
- 2023 के कान्स फिल्म फेस्टिवल के द्वारांन दौरान 644 उड़ाने भरी गई। जिससे करीब 4,800 टन सीओ2 उत्सर्जित हुई।
- चार वर्षों में निजी विमानों की संख्या में हुआ है 28 फीसदी का इजाफा
- दुनिया की महज 0.003 फीसदी आबादी ही इन निजी उड़ानों का इस्तेमाल करती है, लेकिन इसके बावजूद यह परिवहन का सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाला साधन है।

Result Mitra

- रिसर्च के अनुसार एक निजी जेट में सफर करने वाला यात्री एक घंटे में इतना सीओ2 उत्सर्जित करता है जितना एक आम आदमी पूरे साल में करता है।

- 2019 से 2023 के बीच ही निजी विमानों की संख्या में 28 फीसदी की वृद्धि हुई है।

साइबर हमले और महत्वपूर्ण सूचना एवं संरचना

Result Mitra

- हाल ही में Department of Personnel and Training के अनुसार, 2023 में रैनसमवेयर हमलों के निशाने पर महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचनाएं रही

- 2023 में देश में कई साइबर हमले हुए, जिस देश की सुरक्षा को खतरे में डाला जा सके।

क्या है महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना (CII) :–

- परिभाषा: सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 70 के अनुसार, महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना (CII) एक प्रकार का कंप्यूटर संसाधन है।

- जब किसी कारण से महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना काम न करे या नष्ट हो जाए तो उससे राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य या सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

ड्रोन बनते भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा

Result Mitra

- हाल ही में सीमा सुरक्षा बल के द्वारा बताया गया है कि ड्रोन कैसे भारत की सुरक्षा को चुनौती दे रहे हैं

- भारत और पाकिस्तान की सीमा पर विगत कुछ दिनों में बड़ी मात्रा में ड्रोन जप्त किए गए हैं जिनमें सबसे अधिक संख्या पंजाब में है।

- BSF ने 2023 में 107 ड्रोन जब्त किए थे।

- 2024 में इनकी संख्या लगभग दोगुनी हो चुकी है।

- जबकि भारत ने एंटी ड्रोन सिस्टम तथा अन्य प्रकारों से अधिकतर ड्रोन को जप्त कर लिया है।

- इन ड्रोनेस का प्रयोग पाकिस्तान के द्वारा हथियार ड्रग्स गोला बारूद तथा आतंकवादियों को सूचना पहुंचाने के लिए किया जाता है।

- जिसका उद्देश्य भारत में अस्थिरता फैलाना है।

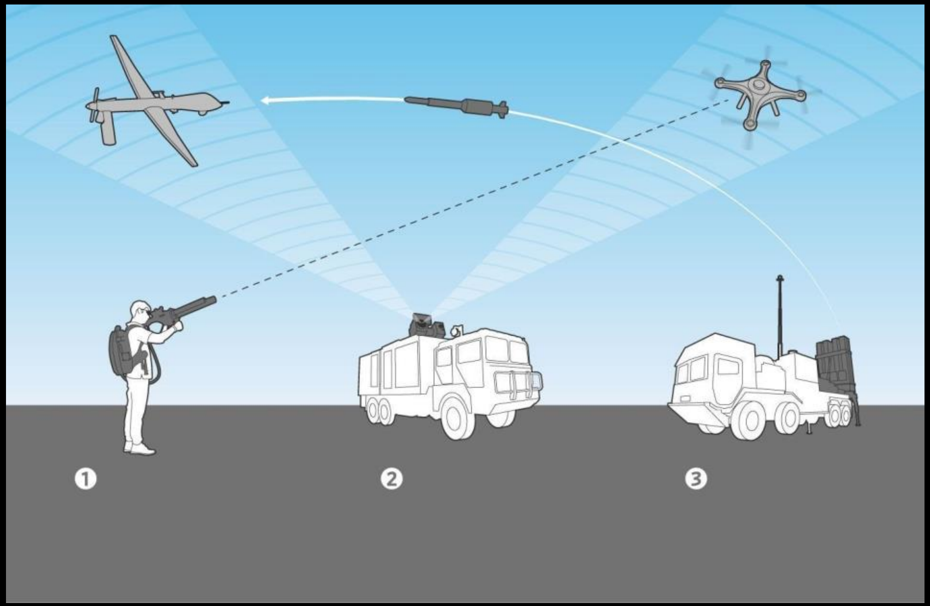

ड्रोन से उत्पन्न सुरक्षा संबंधी खतरे

- ड्रोन का शस्त्रीकरण: ड्रोन में मामूली परिवर्तन करके उन्हें विस्फोटक रूप में परिवर्तित किया जा सकता है
- ड्रोन से सीमा पर क्षेत्र में ऐसी चीजों को भेजा जा सकता है जो उसे देश के आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर दें
- ड्रोन साइबर अटैक , फिजिकल अटैक और इलेक्ट्रॉनिक जमीन कर सकते हैं जिससे महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं में व्यवधान उत्पन्न किया जा सके

भारत और एंटी-ड्रोन तकनीकें

- हाई-पावर माइक्रोवेव (HPM) सिस्टम्सः एक बड़े क्षेत्र में सिस्टम्सः द्वारा माइक्रोवेव ऊर्जा की धारा उत्सर्जित की जाती हैं।

- सिस्टम्स का लाभ :– संदिग्ध व्यक्तियों या ड्रोन या इस प्रकार के लघु इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण को किसी क्षेत्र में प्रवेश करने से रोकने में अधिक उपयुक्त।

- रेडियो फ्रीक्वेंसी सेंसर्सः इसकी मदद से बड़े क्षेत्र में ड्रोन रेडियो सिग्नल्स को पकड़ा जा सकता है

Result Mitra

- एंटी-रोग ड्रोन टेक्नोलॉजी कमेटी (ARDTC): इसकी स्थापना केंद्रीय गृह मंत्रालय ने की है। इसका उद्देश्य शत्रु-ड्रोन से निपटने के लिए उपलब्ध तकनीक का मूल्यांकन करना और उसे प्रमाणित करना है।

- ड्रोन नियम 2021: यह भारतीय हवाई क्षेत्र को तीन जोन; ग्रीन, येलो और रेड में विभाजित करता है। रेड जोन "नो गो ज़ोन" है यानी इस क्षेल में ड्रोन उड़ाने की अनुमति नहीं है।

- सर्विलांस प्रणाली को मजबूत करने के लिए भारत-पाक सीमा पर खतरे वाले क्षेत्रों की विस्तृत मैपिंग की गई है।

THANK YOU

Result Mitra™

@resultmitra / 8650457000

@resultmitra

@resultmitra

Result

SUBSCRIBE

LIKE & SHARE

PDF